Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

नेपाल देश के प्रचलित विभिन्न लोकगीतों का अध्ययन

Mohan Shova Maharjan[1], Dr. Rajesh Kelkar[2], Dr, Kedar Mukadam[3]

1 Research Scholar, Dept. of Vocal, Faculty of Perf. Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda
2 Dept. of Vocal, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda, Barodra
3 Assistant Professor Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda, Barodra

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा नेपाल में प्रचलित विभिन्न लोकगीतों का अध्ययन किया गया है। प्राचीन काल से ही अपनी अलग पहचान बनाने में सफल देश नेपाल, संगीत पक्ष में भी उतना ही सबल और सक्षम है। इस शोधपत्र के माध्यम से शोधार्थी संपूर्ण देश के विभिन्न जात तथा जातियों में प्रचलित लोकगीतों की जानकारी एकत्र करने की प्रयास कर रही है, जो इस शोधपत्र की भूमिका है। इस अध्ययन के अधीन शोधार्थी ने नेपाल में प्रचलित मुख्य जातियों तथा उनके गीतों का परिचय, गाने की पद्धति, गाने का स्थान व समय, उन गीतों में प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के वाद्यों के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।

बीज शब्दः नेपाली संगीत, नेपाली जाति, लोकसंगीत, नेवार, दाफा संगीत।

भूमिका

नेपाल बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी और बहुआयामी राष्ट्र है। एशिया महादीप के मध्य भाग में अवस्थित देश नेपाल जो की चीन और भारत के मध्य अवस्थित सार्वभौम राष्ट्र है। क्षेत्रफल के आधार पर अत्यंत छोटा होते हुए भी इसकी भौगोलिक अवस्था, सांस्कृतिक गतिविधियां, विभिन्न जाति तथा जनजातियों की विशालता इसे महत्वपूर्ण बनाते हैं। सन् २०११ के जनगणना तथ्यांक के आधार पर यहां तीनों प्रांतो में १०० से अधिक जातियां और जातीय समूह है, जो चार भाषा परिवारों की १२३ से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोलते है।[1] इन विभिन्न जातियों के अंतर्गत मुख्य जातियाँ ब्राह्मण, क्षेत्री, नेवार, राई, लिम्बू, मगर, गुरुंग, भोटे, मिथिला आदि तथा इन सभी की उपजातियों का रेहवास है। यह सभी जातियाँ अपने–अपने कला–संस्कृति, रीति–रिवाज़, भाषा आदि को विभिन्न तरीके से दर्शाती हैं। इसी कारण नेपाल में लोकसंगीत के विभिन्न प्रकार अस्तित्व में आए हैं।

नेपाल के विभिन्न लोकगीत

विश्व के अन्य देशों के प्रचलित लोक–संगीत के समान नेपाल देश का लोक–संगीत स्वयं भी एक अलग पहचान रखता है। बहुसंख्यक जाति एवं जनजातियों के निवास स्थान के कारण विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज़, पर्व, संगीत इत्यादि प्रचलन में है। प्रत्येक जातियों का जीवन निर्वाह भी अलग–अलग प्रकार से होता है। इसी कारण उनकी अपनी कला, संस्कृति और संगीत भी अलग–अलग है और उसका प्रस्तुतिकरण भी विभिन्न प्रकार से होता है।

नेवारी लोकगीत

नेपाल के विविध जातियों में से महत्वपूर्ण नेवार जाति है, जो आर्थिक रूप से एवं विविध कला संस्कृति से सुसंपन्न हैं। यह जाति संपूर्ण नेपाल के भू–भाग में यत्र–तत्र समूहगत रूप में निवास करती है। विशेषतः

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

काठमाण्डू, भक्तपुर, ललितपुर (पाटन) में इनका मुख्य निवास स्थान माना जाता है। परंतु आधुनिक काल में यह नेपाल के यत्र–तत्र क्षेत्र जैसे– नुवाकोट, रसुवा, धादिंग, मकवानपुर, रामेछाप, दोलखा, सिंधुपाल्चोक, काभ्रे इत्यादि क्षेत्र में भी फैले हुए हैं। नेपाली इतिहास में नेवार एक जात अथवा जाति न होकर विविध जातियों के मिश्रण से नेवार विभाजित हुई है। ऐसा उल्लेख किया गया है, क्योंकि काठमाण्डौ में लिच्छवियों (२२५ इ.सं. के बाद शुरु हुए शासन) के शासनकाल में पहले अनेक राजाओं ने राज्य किया था जो नेवार जाति के थे।[2] नेवारी समुदाय दो धर्मावलम्बियों में बंटा हुआ है। बुद्ध मार्गी और शैव मार्गी या हिन्दू धर्मावलम्बी, इसी कारण नेवार बहुधर्मावलम्बियों के रूप में जाने जाते है। नेवारी समुदाय की मातृभाषा नेवारी है, जिसे नेवारी लोग "नेवाः भाय" (भाषा) कहते हैं।

नेवारी समुदाय संपूर्ण नेपाल की कला, साहित्य, संस्कृति, गीत–संगीत, वाद्य–वादन इत्यादि विभिन्न जात्रा, मेला, महोत्सव, धार्मिक–कार्य, पर्व, त्यौहार इत्यादि में अहम् भूमिका निभाती है। नेवारी लोक–संगीत में प्रचलित मुख्य संगीत दाफा संगीत, बारहमासे गीत, तुतः और चचा (चर्या गीत) प्रमुख माना गया है। विभिन्न वाद्यों जैसे खीं, ताः, बभु बजाकर समुह में बैठ के गाया–बजाने वाले भजन–भक्ति संगीत को दाफा संगीत कहते हैं। दाफा संगीत शास्त्रीय रागों पर आधारित होता है। यह गायन मध्य काल (१३वीं शताब्दी के बाद) के मल्ल काल में ज्यादा प्रचलित गायन माना गया है। इसमे विशेषः 'ग्वारा' गायन होता है जो राग में निबद्ध होता है। दाफा संगीत को विशेष पर्वों, त्यौहारों के महीने जैसे– श्रावन, भाद्र, आश्विन, कार्तिक, माघ, फाल्गुन में प्रतिदिन गाया जाता है। दाफा संगीत ईश्वर की आराधना एवं स्तुति गायन है, जो भक्तिरस प्रधान होता है। दूसरा प्रचलित बारहमासे लोकगीत के अंतर्गत प्रत्येक महीने में विभिन्न राग में आधारित गीत गाने की परंपरा हैं जैसे– बैशाख में धनाश्री, जेष्ठ में देवगिरी, आषाढ़ में ब्यांचुली, श्रावन में मालश्री, भाद्र में सोरठ, आश्विन में केदार, कार्तिक में कोला, मार्गशीर्ष में विभाष, पौष में सारंग, माघ में वसंत, फाल्गुन में पथमंजली एवं चैत्र में चैती राग गाने की प्रथा है।[3]

नेवारी लोक–संगीत के अंतर्गत फागु गीत और वसंत गीत अत्यधिक प्रचलित गीत है। नेवारी समाज में फागु एक पर्व के रूप में मनाई जाती है। इस पर्व में काठमाण्डू लगायत भक्तपुर, ललितपुर के नेवारी जाति ८ मात्रा के विशेष प्रकार का "चो" ताल रचित गीत तथा वाद्य–वृंद प्रस्तुत करके नाच–गान करते हैं। फागु गीत में प्रायः वसंत ऋतु, फागुन मास, रंग–विरंग, प्रेम रस के विषय वस्तु के आधारित शब्द प्रयोग होता है। इस गीत को समूह में मिलकर गाया जाता है, जो अत्यंत सरल स्वर रचना में रचित होता है। वैसे ही वसंत गीत ऋतुकालीन गीत है, जिसको नेवार जाति वसंत पंचमी के दिन से गाते हैं। विभिन्न नेवारी दाफा समूह, भजन समुहों में वसंत की धुनें तथा गायन करते हैं। इस गीत की धुन सरल और मिठासपूर्ण होती है। वर्तमान समय में इस गीत को ज्यादातर आठ मात्रा के ताल में गाते हैं। यह शास्त्रीय राग वसंत से अलग है, जिसमें प्रायः शुद्ध स्वरों और कभी–कभी तीव्र स्वरों का प्रयोग होता है।[4] वसंत गीत में प्रायः वसंत ऋतुओं का वर्णन मिलता है जो श्रृंगार रस से भरपूर होता है।

इन सभी गीत प्रकारों में नेवारी जाति विभिन्न वाद्यों का प्रयोग करती है जैसे– खीं, मगखीं, धीमे, भुस्या, छुस्या, तिनछुक, मुहाली, पोंगा, बांसुरी, काँ, नयखीं इत्यादि।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

सेर्पा (सेब्रू गीत)

सेर्पा जाति द्वारा गाये जाने वाला गीत को सेब्रू या सेर्पा गीत कहते हैं। सेर्पा जाति का मुख्य स्थल नेपाल का पूर्वी हिमाली भाग है। सेर्पा जाति का पुर्खा मंगोलियन परिवार है, जिन्होंने प्राचीन काल में उत्तरी नेपाल से प्रवेश किया, जो तिब्बत से दक्षिण पूर्वी भाग पड़ता है। इस प्रकार नेपाल का पूर्वी सोलुखुम्बू जिला सेर्पा जाति का विशेष वास स्थल है। ठंडी जलवायु में रहने वाले सेर्पा जाति के लोग काफी मज़बूत और बलवान होते हैं, इसी जलवायु का असर इनके संस्कृति, रहन–सहन, पर्व–गीत और नृत्य में भी पड़ा है। सेर्पा जाति पूर्ण रूप से बौद्ध–लामा सम्प्रदाय की बौद्ध धर्मावलंबी जाति है। इस प्रकार सेर्पा जाति के संगीत सामजिक एवं धार्मिक दोनों प्रकार के मिलते हैं। इस जाति के संगीत एवं नृत्य अन्य जाति से नहीं बल्कि तिब्बती जाति से मिलता–जुलता होता है। गायन के साथ–साथ नृत्य भी किया जाता है। सेर्पा गीत की रचना ज्यादातर औड़व स्वरों में मिलता है और तार सप्तक में गाया जाता है। गायन के साथ नृत्य करने में पैरों को हल्का उठाकर ताल देकर गाने की परंपरा है। सेर्पा जाति में दो प्रकार के गायन होते हैः सामाजिक और धार्मिक गीत। सामाजिक गीत में प्रायः वाद्यों का प्रयोग नहीं किया जाता है जिसको 'लामो भाका' कहते है। दूसरा धार्मिक गीत में विभिन्न वाद्यों जैसे– ढयांग्रो, झ्याली, घंटा इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। सेर्पा जाति का विशेष पर्व ल्होसार (नया वर्ष), दुम्जे और मनिरिम्बू है, जिसमें दोनों प्रकार के गीत संगीत का प्रयोग किया जाता है।[5]

तामांग सेलो गीत

नेपाल में पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र में बसने वाले तामांग जाति के भाका (tune) को तामांग सेलो गीत कहते हैं। तामांग जाति का विशेष वास स्थान बागमती अंचल के आसपास से लेकर जनकपुर, सागरमाथा और कोशी अंचल तक है। कुछ तामांग जाति के लोग नेपाल के पश्चिम क्षेत्र में भी जीवन निर्वाह करते हैं।

तामांग गीत तामांग भाषा में गाया जाता है। यह गीत विशेष मेला, पर्व, जात्रा, विवाह एवं ब्रतवंध इत्यादि मंगलकार्यों में गाया जाता है। इस गीत को केवल पाँच स्वरों में औड़व जाति के भाका में गाते है इसलिए सुनने में एक रस लगता है। इस में लय आठ या चार मात्रा में होती है। जगह के आधार पर रचना अलग होती है परंतु लय एक ही प्रकार की बजाई जाती है। तामांग सेलो गीत के गान समय मुख्य वाद्य 'डम्फु' बजाया जाता है, जो इस जाति का मुख्य और प्रिय वाद्य माना जाता है। इसी प्रिय वाद्य 'डम्फु' के संग तामांग जाति विभिन्न पर्वो और त्यौहार में गायन के साथ–साथ नृत्य भी करते हैं। तामांग सेलो को एकल, युगल और जुहारी (समूह) में गाया जाता है। इसकी चाल नृत्य के समय द्रुत और गायन समय धीमी गति में गाया जाता है।[6] इस गीत की भाका सरल सहज होने की वजह से अन्य जाति जैसे– थारु और पर्वते जातियां भी गाते हैं। वर्त्तमान समय में विभिन्न भाषाओं में भी तामांग सेलो गाने लगे हैं, इसलिए पूरे देश में इस गीत की भाका प्रचलित है।

दमाई गीत

दमाई जाति का मुख्य स्थान पश्चिम नेपाल है फिर भी यह जाति संपूर्ण पहाड़ी भाग तथा अन्य भागों में निवास करती है। इस जाति का मुख्य पेशा कपड़ा सिलना और वाद्य–वादन करना है। दमाई जाति को जन्मजात ही संगीत प्रेमी माना जाता है। अतः इस जाति के कलाकार ज्यादा से ज्यादा पेशेवर होंगे ऐसा मानना उचित होगा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

दमाई गीत दमाई जाति द्वारा ही परंपरागत रूप में गाया जाता है, इसलिए इस गीत को 'दमाई गीत' कहा गया है। दमाई गीत नेपाली भाषा में ही गाया जाता है। गीत की भाषा सर्वसुलभ और सामान्य होने के कारण दमाई जाति के अलावा अन्य जातियों में भी प्रसिद्ध है। दमाई गीत की धुन विशेष रूप में दमाई जाति के चाड पर्व, शुभकार्य विवाह, ब्रतवंध इत्यादि में और अन्य जातियों द्वारा खेती एवं शुभकार्य इत्यादि में मंगलसूचक गीत के रूप में गाया–बजाया जाता है, जो वर्तमान समय तक विद्यमान है। यह गीत चार या आठ मात्रा में रचनाबद्ध होता है। यह गीत वाद्य–प्रधान है। इस गीत का मुख्य वाद्य पञ्चे वाद्य और नौमती वाद्य है। पञ्चे वाद्य के अंतर्गत अनिवार्य रूप में शहनाई, टयामको, कर्णाल, नरसिं और झ्याली बजाई जाती है। इसी पञ्चे वाद्य में दूसरा वाद्य समावेश करके नौमती वाद्य बजाया जाता है।[6]

मैथिलि गीत

नेपाल की प्रमुख भाषाओं के अंतर्गत मैथिली भाषा भी एक है, जो मिथिला की राजधानी जनकपुर अंचल, कोशी अंचल और नारायणी अंचल में बोली जाती है। मैथिली जाति द्वारा गाया जाने वाले मैथिली लोकगीत अत्यंत प्राचीन माने जाते हैं। मैथिलि गीत पुरुषों से ज्यादा स्त्रियाँ गाती हैं। इन गीतों में विभिन्न समय और परिवेशों में मानव जीवन में घटित घटनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है जैसे– बारहमासा, छौमासा, चौमासा, फगुवा, सोहर, बटबगनी, वसंत, छठ, झिझिया, समा चकवा, जटजटीन, डोमकछ इत्यादि। ऋतुकाल में वसंत, फगुवा इत्यादि गाया जाता है। स्त्रियों के विशेष चाड तीज और छठ में पर्वकालीन छठ गीत स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। कजरी गीत भी विशेषकर स्त्रियाँ ही गाती है जो स्त्री मन की विरह वेदना से ओतप्रोत होता है। मैथिली गीतों में विशेष रूप से झाल, ढोलक, पिपही, सिंधा, डमरू, घंटा, डंका, नगाड़ा इत्यादि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।[7]

भैलो गीत

हेमंत ऋतु के आगमन समय कार्तिक मास में दीपावली पर्व में अमावस्या की रात लक्ष्मी पूजा में भैलो गीत गाया जाता है। यह नेपाली हिंदुओं का महान चाड है। दीपावली के समय में ही गाया जाने वाले इस गीत को पर्व गीत मान सकते हैं। लक्ष्मी पूजा की रात को स्त्रियाँ मिलकर घर–घर जाके भैलो गीत गाया करती हैं, जिसे 'भैलो खेलना' कहते हैं। इस गीत की भाका को लंबा खींच के गाने की परंपरा है। इस गीत में लक्ष्मी माँ का वर्णन, भला शब्दों का प्रयोग करके आशीर्वचन के रूप में गाया जाता है। भैलो गीत केवल स्त्रियाँ ही गाती है परंतु अभी पुरुषों द्वारा गायन करने की परंपरा बन रही है। महान चाड होने से पूरे नेपाल में इस गीत को गाया जाता है। यह राष्ट्र भाषा नेपाली में गाया जाता है। भैलो गीत बिना वाद्य तथा वाद्यों के साथ जैसे– मादल, मुरली, मुर्चुंगा इत्यादि के साथ गाते हैं। इस गीत में छः तथा आठ मात्रा का ताल प्रयोग किया जाता है।[8] धार्मिक परंपरा के अंतर्गत भैलो गीत गाने वाली स्त्रियों को साक्षात लक्ष्मी के समान मानते हैं इसलिए उन समूहों की अच्छे फल, फूल, सेल (रोटी), अन्न से विदाई करते हैं।

धिमाल गीत

नेपाल में धिमाल जाति पूर्वी स्थान कोशी और मेची अंचल के झापा जिला में अधिकांश निवास करती है। इस जाति की संस्कृति और भाषा राई और लिम्बू जाति के साथ मेल खाती है। यह एक पिछड़ी आदिवासी जाति है। यह जाति जंगल के आसपास रहना पसंद करती है। धिमाल जाति की अपनी ही अलग सी संस्कृति, परंपरा,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भाषा, संगीत आदि प्रचलित है। धिमाल जाति का अलग भाका गाने की परंपरा है, जिसे 'धिमाल गीत' कहते हैं। इस गाने में यह जाति अपने सुख–दुख, खुशी, उमंग, वेदनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। धिमाल गीत में 'साल्व शाय शाय' गीत पूरे नेपाल में प्रचलित माना जाता है। यह एक गाने में थेगो है जो बार–बार दोहरा के गाया जाता है। गाने के साथ–साथ नृत्य भी करने की चलन है। महान पर्व दीपावली में यह जाति इसी गीत को गाकर देउसी भैलो खेलने गाने जाते है। यह छः मात्रा में निबद्ध गाना है, जो विभिन्न वाद्यों के साथ गाया जाता है। जैसे– सेरेन्जा, च्याप्ब्रुंग, डिंगा (ढोल), मानर (एक प्रकार का मादल), उर्नी, दोदरा इत्यादि।[9]

लोक दोहोरी

लोक दोहोरी गीत 'युगल गीत' है जो नेपाल के पूर्वी स्थान से लेकर पश्चिम स्थान तक गाया जाता है। इसमें दो समूह होते हैं स्त्रियों का समूह और पुरुषों का समूह। दोनों समूह आमने–सामने बैठकर यह गीत गाते हैं। इसका प्रारंभ पुरुषों से किया जाता है और उसके बाद स्त्रियों के गाने की परंपरा है। यह संगीत में मुख्य गीतों के शब्दों द्वारा प्रश्नोत्तर करके जुहारी की तरह गाया जाता है। इस गीत का गान वे लोग कर सकते हैं जिनमें तत्काल शब्द–रचना करने की क्षमता हो। लोक दोहोरी गायन एक–दो दिन न कर पूरे सप्ताह खेला (गाया) जाता है। इस गायन को स्पर्धा के रूप में खेला जाता है और विजयी को पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। यह संगीत देश में ही नहीं, विदेशों में भी प्रख्यात है। यह गायन समान लय में अंतिम समय तक गाया जाता है, जिसमें नेपाल का प्रमुख लोक वाद्य मादल के संगत में गाया जाता है। लोक दोहोरी में प्रेम–प्रसंग, सामाजिक–स्थिति, आर्थिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष, रूठना, मनाना इत्यादि प्रसंगों को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।[10] इन्ही प्रसंगों के शब्द संरचना को सुनने के बाद दर्शक एवं श्रोता अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनोरंजन प्राप्त करते है। यह लोक दोहोरी गीत पूरे नेपाल में प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

विश्व के अन्य देशों के प्रचलित लोक–संगीत के समान नेपाल देश का लोक–संगीत स्वयं भी एक अलग पहचान रखता है। बहुसंख्यक जाति एवं जनजातियों के निवास स्थान के कारण विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज़, पर्व, संगीत इत्यादि प्रचलन में है। प्रत्येक जातियों का जीवन निर्वाह भी अलग–अलग प्रकार से होता है। इसी कारण उनकी अपनी कला, संस्कृति और संगीत भी अलग–अलग है और उसका प्रस्तुतिकरण भी विभिन्न प्रकार से होता है। इन लोकगीतों की भाषा बोली, गाने की पद्धति, तालों का प्रयोग, लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्यों के प्रयोग एवं वर्तमान समय में लोकगीतों व्यापकता अपने आप में वैचित्रपूर्ण है।

संदर्भ

1 Bandhu, C. M. (2073 B.S). Aspects of Nepali Folklore. Nepal Academy, First Edition kamaladi Kathmandu, page no. 13 2073 B.S
2 आचार्य, बाबुराम. (वि. सं. 2018). प्राचीन काल नेपाल. अंतर्राष्ट्रीय मंच छापाखाना प्रा. लि., काठमांडौ, पृ. 65 वि.सं. 2018
3 कारंजीत, मंगला. (1995). ऋतु मे. बारहमासे मेया अध्ययन. नेपाल भाषा मिसा खलः, पृ. 21–22 12जी रनसल, 1995
4 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 131 छवअमउइमत 2000

5 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 133 नवंबर 2000

6 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 65 वि.सं. 2060

7 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 132 छवअमउइमत 2000

8 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 70–71 वि.सं. 2060

9 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 68 वि.सं. 2060

10 Bandhu C. M. (2073 B.S). Aspects of Nepali Folklore. Nepal Academy, First Edition kamaladi Kathmandu, page no. 44 2073 B.S

ISSN 0975-5217
UGC-Care list (Group-I)

भैरवी

(दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला की शोध-पत्रिका)

(वर्ष 2021 अंक 20)

मिथिलांचल संगीत परिषद्
स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग
ललित कला संकाय
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा 846 004

अनुक्रम

संपादक की कलम से ... 9

1. भागलपुर घराना : एक अवलोकन — डॉ. अरविन्द कुमार 13
2. सार्वभौमिकता के परिवेश में भारतीय संगीत — डॉ. अनया थत्ते 16
3. संगीत का आध्यात्मिक पक्ष — क्षमा मिश्रा 20
4. ऑनलाइन प्रणाली द्वारा संगीत शिक्षण में चुनौती एवं सम्भावनाएं : नई शिक्षा पद्धति के सन्दर्भ में — दीपक सिंह 28
5. अवध क्षेत्र का लोक गीत : एक अध्ययन — डॉ. ज्योति विश्वकर्मा, 32
6. ''रेला" एक महत्वपूर्ण वादन प्रकार — डॉ वेणु वनिता 37
7. आभासी संगीत शिक्षा में नवाचार और रचनात्मकता - एक प्रयोग — डॉ. स्नेहाशीष ज. दास 42
8. भीष्म साहनी के नाटक,समाज और सामाजिक दस्तावेज — प्रो. पुष्पम नारायण, मो. इरफान अहमद 46
9. पंडित भातखंडे की थाट पद्धति : एक अध्ययन — विशाल विजय कोरडे 50
10. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उन्नत अवस्था में लोक संगीत का स्थान — प्रो. डॉ. जयश्री मि. वैष्णव 54
11. उपशास्त्रीय संगीत की विधा - चैती — प्रो. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या' मणिकान्त कुमार 58
12. आधुनिक भारत में संगीत-शिक्षण का गौरवशाली इतिहास — प्रो. पुष्पम नारायण, निधि कुमारी 62
13. गुरमत संगीत के प्रमुख वाद्य — बलदीप कौर 67
14. संगीत रामायण के रचयिता पं. रामाश्रय झा 'रामरंग' जी — प्रियंका सहवाल 73
15. नेपाल में प्रचलित 'नेवारी संगीत' में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यः एक अध्ययन — मोहन शोभा महर्जन, डॉ. राजेश केलकर 78
16. भक्ति संगीत की अनन्य साधिका मीरा — संदीप मुखर्जी, डॉ. कुमार अम्बरीश चंचल 82
17. समस्तीपुर की संगीत कला साधना में स्वतंत्रता पूर्व के कलाकारों का योगदान — सुमन सौरभ, डॉ. लालति कुमारी 85
18. विशाखदत्त के नाटकों में यथार्थ चित्रण — डॉ. पुष्पम नारायण, सुनिता भारती 90

नेपाल में प्रचलित 'नेवारी संगीत' में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यः एक अध्ययन

*मोहन शोभा महर्जन, **डॉ. राजेश केलकर

शोध सारः

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा नेपाल में प्रचलित 'नेवारी संगीत' में प्रयुक्त मुख्य वाद्यों का अध्ययन किया गया है। प्राचीन काल से ही अपने अलग पहचान बनाने में सफल नेपाल के नेवारी जाति संगीत पक्ष में भी उतना ही सबल और सक्षम है। इस शोधपत्र के माध्यम से शोधार्थी नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यो की जानकारी एकत्र करने की प्रयास कर रही है, जो इस शोधपत्र की भूमिका है। इस अध्ययन के अधीन शोधार्थी ने नेवारी संगीत में प्रयुक्त वाद्यों का प्रकार, बनावट, बजाने की विधि, वाद्यो का प्रयोग एवं महत्व के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्दः *नेपाली वाद्य, नेवारी संगीत, नेवर, वाद्य प्रकार*

प्रस्तावनाः

नेवारी संगीत नेपाल का एक लोक संगीत प्रकार है, जो नेपाल में बसनेवाली नेवारी जाति द्वारा निलमत तथा प्रचलित है। नेवारी जाति नेपाल की आदिवासी जनजाति में मानी जाती है, जो काठमांडौ राजधानी शहर तथा उसके आसपास के जिलों में ज्यादा रहवास करती है। नेपाली इतिहास में नेवार एक जात अथवा जाति न होकर विविध जातियों के मिश्रण से नेवार विभाजित हुई है ऐसा उल्लेख किया गया है। इतिहासकारों के अनुसार नेपाल में लिच्छवी काल (225 ई.सं के बाद शुरू हुई शासन) से पहले ही नेवार जाति रहवास करते थे और शासक भी नेवार ही होते थे। नेपाल के इतिहास शिरोमणि बाबूराम आचार्य के अनुसार मंगोल नस्ल के नेवांग/नेवाः/नेवाहांग जाति के लोग ही आज के नेवार आदि पूर्वज हैं। विद्वानों का यह भी मत है की, क्राइस्ट के 600 साल पूर्व नेपाल में नेवार जातियों का रहवास रहा है।(1)

प्राचीन काल से रहवास नेवार जाति के अन्य जातियों के सामने अपना अलग एवं विशेष स्थान लेने में सफल हैं। नेपाल की राजधानी काठमांडू शहर में अवस्थित होने के कारण भी यह संगीत की व्यापकता पूरे नेपाल में प्रचलित सभी प्रकार के लोक संगीत में नेवारी संगीत का एक विशेष स्थान है। प्राचीन काल से प्रचलित नेवारी संगीत में विभिन्न गीत प्रकार गाया जाता है। उन सभी गीत प्रकारों में विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग होता है। नेवार समाज में कोई हिन्दू धर्म को मानते है तो कोई बुद्ध धर्म को मानते है। इन दोनों प्रकार के जातियां अपने अपने ढंग से संगीत की साधना एवं प्रस्तुतीकरण करते हैं। संपूर्ण नेवारी जाति में एक ही नेवारी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिसे नेवारी में "नेवाःभाय" (भाषा) कहते है।

नेवारी संगीत के विभिन्न प्रकार जैसे- दाफा संगीत, जो प्राचीन काल से प्रचलित संगीत है, बारहमासा गीत, श्रम गीत, चर्या(स्तुति) गीत, सामाजिक गीत इत्यादि में ज्यादातर नेवारी भाषा का

*शोधछात्रा

**मार्गदर्शक, गायन विभाग, फैकल्टी ऑफ़ परफॉर्मिंग आर्ट्स, द महाराजा सयाजीराव यूनिवसिटी ऑफ़ बड़ौदा, वडोदरा

ही प्रयोग किया गया है, परंतु दाफा संगीत में अन्य भाषा जैसे संस्कृत, मैथिली, हिंदी भाषा का भी प्रयोग पाया गया है। नेवारी संगीत का मुख्य प्रयोग विभिन्न पर्व, जात्रा पर्वो एवं त्यौहार में प्रयोग किया जाता है। इन अलग अलग त्यौहारों में गायन के साथ साथ भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। संख्यात्मक रुप में अन्य नेपाली लोक संगीत की तुलना में नेवारी संगीत में वाद्यों का ज्यादा प्रयोग पाया गया है। नेवारी वाद्यों के इतिहास को देखा जाए तो नेवारी जाति अपने सभ्यता के विकासक्रम के अन्य क्षेत्र के साथ साथ संगीत के क्षेत्र का भी विकास हुआ है। पर्याप्त शोध एवं अनुसंधान की कमी के कारण नेवारी संगीत की वाद्य परंपरा का निश्चित समय कहना मुश्किल है। परंतु ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर नेवारी वाद्य परंपरा लिच्छवी काल में जाकर व्यापक और व्यवस्थित माना गया है। लिच्छवी काल के बाद 12 वीं सदी के बाद मल्ल शासन काल में और ज्यादा व्यापक एवं मजबूत रूप लेने में सफल हुआ है।(2) प्राचीन समय नेवारी विद्वान संगीतज्ञों के अथाह निरंतर साधना और लगाव, प्रेम की वजह से वर्तमान समय तक इसकी मधुर संगीत देखने और सुनने को मिल रहा है।

वाद्यों का चारों प्रकार तत् ,अवनध, सुषिर एवं घन वाद्यों में से नेवारी वाद्यो में ज्यादातर अवनध, सुषिर और घन वाद्यों का प्रयोग ज्यादा किया गया है। कुछ विद्वान प्राचीन शिलालेख, मूर्तिकला, चित्रकलाओं को देखकर ततवाद्यों का प्रयोग मानते है।(3) नेवारी संगीत में प्रयोग किया जाने वाले बहुसंख्यक वाद्यों में से कुछ प्रमुख वाद्य है जैसे-

अवनध वाद्य में -धिमय् वाद्य, खिं वाद्य, धाः वाद्य, नाय खिं वाद्य

सुषिर वाद्य में - पोंगा वाद्य, मुहाली वाद्य, काँ वाद्य, नेकुं वाद्य, बांसुरी वाद्य

घन वाद्य में - ताः वाद्य, बभू, भुस्या वाद्य इत्यादि।

उल्लेखित वाद्यों में से सबसे ज्यादा प्रयोग किये जाने वाले वाद्यों का वर्णन एवं प्रयोग इस प्रकार हैः

धिमय् वाद्य : धिमय् वाद्य नेवारी संगीत परंपरा में सबसे ज्यादा प्रयोग होता है, जो अवनध वाद्य के अंतर्गत आता है। यह वाद्य लकड़ी को अंदर से पूरा खोखला बनाकर बाहर से चमड़े से मढ़कर बनाया जाता है। यह विभिन्न छोटे और बड़े आकार में बनाई जाती है। सबसे बड़े आकर के धिमय् को 'माँ धिमय' बोलते है जो मुख्य चाडपर्वो में बजाया जाता है। दूसरा छोटा आकार का धिमय् को 'यलय प्वः धिमय' कहते है। धिमय् शब्द संस्कृत भाषा के 'डिण्डिम' शब्द से विकास माना गया है। 'डिण्डि' का अर्थ है अनुकरण। पाली भाषा में दिन्दिम, दण्डिम और पाकृत भाषा डिण्डिम शब्द का अर्थ है नगारा, एक प्रकार की वाद्य है। नेपाली भाषा (नेवारिभाषा) में डिण्डिम शब्द ढिंमड से ढेंमस, ढेंमस से ढ्यमस उस के बाद धेमस और धिमस अपभ्रंस होते होते धिमय् शब्द का विकास माना गया है।(4)

ये देखने में ढोल की तरह होता है, जो एक तरफ लकड़ी से और दूसरी तरफ हाथ से बजाया जाता है। अन्य वाद्यों की तुलना में धिमय् वाद्य प्रमुख वाद्य माना जाता है, क्योंकि इस वाद्य का ज्यादा प्रयोग विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में किया जाता है। इस वाद्य को नेवारी जाति के ज्यापू लोगों का प्रमुख वाद्य माना जाता है जो की ज्यादात्तर खेती का काम करते है। वर्तमान समय में इस वाद्य का प्रशिक्षण तीव्र रूप में हो रही है। पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं भी इस में सहभागी हो रही हैं।

खिं वाद्य : अवनध वाद्य खिं नेवारी 'दाफा संगीत' में प्रयुक्त मुख्य वाद्य है। यह वाद्य लकड़ी को अन्दर से पूरा खोखला बनाकर बाहर से चमड़े से मोड़कर बनाया जाता है। नेवारी संगीत में खिं के विभिन्न प्रकार बजाई जाती है जैसे खिं, कोताः खिं,।ः खिं, मग खिं इत्यादि। किसी प्रकार के खिं बिना खरी का होता है, तो किसी में खरी होता है। इस वाद्य की लम्बाई लगभग 30 इंच का होता है जो बीच का भाग थोडा फूला हुआ होता है। इस वाद्य में दो गोलाकार भाग होता है। दाएं हाथ से बजाने वाला भाग छोटा गोलाकार का होता है जिसे 'नासः' कहते है और बाएँ हाथ से बजाने वाले भाग बड़ा गोलाकार का होता है जिसे 'मांका' कहते है। जिस खिं में खरी होता है उसे दोनों तरफ हाथों से बजाया जाता है और जिस में खरी नहीं होता है उसे दाएं

तरफ हाथ से और बाएँ तरफ लकड़ी से बजाने की चलन है।[5] खिं वाद्य की सभी प्रकार भगवान की आराधना, स्तुति गायनों में मुख्य संगत वाद्य के रूप में बजाया जाता है। वर्तमान समय में भी इस वाद्य का प्रयोग तीव्र एवं उच्च स्थान में लिया जाता है।

धाः वाद्य : नेवारी संगीत में प्रचलित अन्य अवनध वाद्य की तरह धाः वाद्य भी विशेष अवनध वाद्य के स्थान प्राप्त है इस वाद्य को गुंला वाद्य भी कहते है, क्योंकि यह वाद्य नेवारी गुंला (श्रावन) महीने में बजाया जाता है। श्रावन महीने के अलावा विभिन्न बौद्ध धर्मावलंबी के बुद्धपूजा, लाखे प्याखं (नाच), महाकाली प्याखं आदि पर्वो एवं त्यौहार में बजाया जाता है। इस वाद्य को नेवारी जाति के शाक्य, वज्राचार्य, तुलाधर, ताम्रकार, कःसा, मानन्धर इत्यादि उपजातियां बजाते हैं।

धाःवाद्य भी धीमय् वाद्य की तरह लकड़ी को अन्दर से खोखला करके दोनों भाग में चमड़ी से ढककर बनायी जाती है। इस वाद्य में भी खरी नहीं लगाया जाता है इसलिए बाएँ के तरफ लकड़ी से और दाएं तरफ की भाग में हाथ से बजाया जाता है।[6]

मुहाली वाद्य : मुहाली वाद्य सुषिर वाद्य है, जो नेवारी जाति के जोगी अर्थात कुश लोगों द्वारा बजाई जाती है। प्राचीन समय से इन्हीं जाति द्वारा बजाते आए हुए मुहाली वाद्य वर्त्तमान समय में भी यथावत है। यह वाद्य विशेष मंगलकार्यों में बजाई जाती है। मुहाली वाद्य में तीन भाग होता है। सबसे पहले फूला हुआ भाग धातु का होता है। बीच का भाग लकड़ी से बना होता है जो अन्दर से खोखला होता है और मुंह से फूंकने का भाग कुल्फी नल ताड, तारी पेड़ के पत्ते से बना होता है। नेवारी भाषा में इस वाद्य को मुहाली, म्वाहाली तथा मायली भी कहते है। इस वाद्य का विभिन्न प्रकार है जैसे साधारण मुहाली, पूजा मुहाली, कुकी मुहाली, भमरा मुहाली, रसन मुहाली, नमोध मुहाली, दमाई मुहाली, चाःतु (घुमाहुआ) मुहाली, देशी मुहाली इत्यादि। नेवारी भाषा में संबोधित मुहाली वाद्य को अन्य भाषा में शहनाई, शनाई कहते है।[7] नेवारी संगीत के अंतर्गत आने वाले सुषिर वाद्यों में विशेषतः मुहाली, बांसुरी और बय है, जिसमे वाद्य के बीच छिद्र होता है। अन्य सुषिर वाद्यों जैसे-प्वांगा, काहा, नेकु, हों, ध्वनि इत्यादि में बीच में छिद्र नहीं होता है, इसलिए ये वाद्य एक ही सुर में बजता है।

पोंगा वाद्य : पोंगा वाद्य का प्रयोग नेवारी दाफा संगीत में होता है। यह सुषिर वाद्य है। यह वाद्य ताम्बा का बना होता है जिसकी लम्बाई लगभग 36 इंच का होता है। यह वाद्य बॉस की तरह होता है, जिसका फूंकने का भाग छोटा गोल और आवाज निकलने का भाग बड़ा गोल होता है। इस वाद्य में तीन टुकड़ा होता है जो बजाने के समय में जोड़कर बजाया जाता है। दाफा संगीत में इसका मुख्य काम गायकों को अगला भाग क्या गाना है इस बात की जानकारी देना है। इस वाद्य से दाफा गायन में ताल मेल मिलाने का कार्य करता है इसलिए पोंगा वादक को दाफा गायन शैली एवं अन्य संगत वाद्यों का जानकार होना अति आवश्यक माना जाता है। प्राचीन समय से अत्यंत प्रचलित पोंगा वाद्य वर्त्तमान समय में वादकों के संख्या कम होने के कारण दाफा संगीत समूह में इस वाद्य का वादन बहुत ही कम पाया गया है।[8]

काँ वाद्य : सुषिर वाद्य के अंतर्गत आने वाला काँ वाद्य, नेवारी संगीत में अपना अलग ही स्थान है। इस वाद्य की बनावट लम्बी होती है, परंतु बांसुरी की तरह बीच में छेद नहीं होता है। इसलिए एक ही प्रकार का सुर बजता है। यह वाद्य नायखिं वाद्य तथा धीमे वाद्य के साथ बजाया जाता है। इस वाद्य का प्रयोग विभिन्न जात्रा पर्व एवं रथ परिक्रमा में बजाया जाता है। इस वाद्य को जात्रा पर्व के रथ यात्रा में हमेशा पहला स्थान में रखा जाता है, इसके बाद ही अन्य वाद्यों का क्रम रखा जाता है। यह वाद्य जात्रा पर्व के अलावा मृत्यु के बाद शव को आर्याघाट ले जाने के समय में भी बजाया जाता है।

नेकुं वाद्य : नेकुं वाद्य भैंस की सिंग से बनाया जाता है। इस में एक ही प्रकार की आवाज निकलती है। इस वाद्य को पूरे साल में केवल सावन महीने में ही बजाया जाता है, जिसे नेवारी गुंला महीना कहते है। गुंला महीने में बौद्ध धर्माबलम्बीयाँ सुबह के समय में नेंकू वाद्य, धीमे वाद्य, धाः वाद्य, भुस्या वाद्य आदि बजाके नगर परिक्रमा करके भगवान की आराधना करते है।

ताः वाद्य : ताः वाद्य अष्ट धातु का बना होता है जो घन वाद्य के अंतर्गत आता है। हिन्दुस्तानी संगीत में इस वाद्य को करताल या मंजीरा कहते है। नेवारी संगीत में इस वाद्य को ताल नियंत्रक वाद्य है। हरेक प्रकार के गायन जैसे- दाफा संगीत, भजन, स्तुति, वज्रयान चर्या गीति में विभिन्न प्रकार के नृत्यों में इस वाद्य को अनिवार्य बजाया जाता है। इसलिए इस वाद्य का व्यापकता बढ़ी है। अनुसंधान कर्ताओं के आधार पर आठवीं सदी के विभिन्न मूलतयों में ताःवाद्य वादन की आकृति मिलने से इस वाद्य प्राचीनता भी स्पष्ट होता है। नेवारी परंपरा अनुसार ताः वाद्य को बजाने से पूर्व तांत्रिक विधि द्वारा पूजा करते है फिर गुरु अपने शिष्यों को बजाने के लिए देते हैं। इस वाद्य में दो ही बोल बजता है 'तिं' जो उंचा सुर है और 'छू' जो मंद्रस्वर में होता है। नेवारी संगीत में ताःवाद्य को प्रमुख वाद्य मानते है इसलिए जो व्यक्ति इस की वादन करता है, उस व्यक्ति को प्रमुख वादक मानते है।[9]

भुस्या : नेवारी संगीत में भुस्या वाद्य भी ताः वाद्य की तरह घन वाद्य है जो अष्ट धातु से बना होता है। यह वाद्य ताःवाद्य के तुलना में बड़ा है जिस की गोलाकार 10 इंच होता है। इस वाद्य की मोटाई पतला होता है इसलिए बजाते समय इसकी आवाज बड़ा सुनाई देता है। इस वाद्य को पकड़ने के लिए आसानी हो इसलिए वाद्य के गहरे भाग में छेद करके डोरी बंधा होता है। भुस्या वाद्य विभिन्न अवनध वाद्य जैसे - धाः, नाय खिं, धीमें वाद्य इत्यादि के साथ संगत में बजाया जाता है।[10] नेवारी समाज में कोई भी त्यौहार, पर्वो, जात्रा, शुभ कार्य कहीं प्रदर्शनी, मेला इत्यादि में भुस्या वाद्य की गूंज अवश्य ही सुनने को और देखने को मिलता ही है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोधलेख में शोधार्थी द्वारा नेपाल में प्रचलित 'नेवारी संगीत' में प्राचीन समय से वर्तमान समय तक प्रचलित लोक वाद्यों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शोध पत्र के प्रारम्भ में शोधार्थी ने नेवारी जाति का संक्षिप्त परिचय देते हुए विभिन्न नेवारी संगीत में गाया जाने वाले गीत प्रकारों का नाम उल्लेख किया है। उसके बाद उस गीत प्रकारों में प्रयुक्त होने वाले मुख्य वाद्यों का प्रकार बताया गया है। फिर उन वाद्यों का परिचय बताया गया है। नेवारी संगीत में उन वाद्यों का प्रयोग बजाने का समय, वर्त्तमान समय तक उसकी प्रयोग एवं प्रसिद्धि के विषय में शोधार्थी द्वारा उल्लेख किया गया है।

संदर्भ :

1. तुलाधर प्रा.प्रेमशांति. नेपालभाषा साहित्यको इतिहास. नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कमलादी काठमांडौ. पृ. 21
2. प्रजापति सुभाषराम. (वि.सं.2063). संस्कृतिभित्रा. नेवाटेक इन्कार्पोरेटेड, सियाटल वाशिङ्टन, सं.रा. अमेरिका. पृ. 9
3. प्रजापति सुभाषराम. (2006). पुलांगु नेपालभाषा नाटकया संगीत पक्ष. नेवाटेक इन्कार्पोरेटेड, वाशिङ्टन, सं.रा. अमेरिका. पृ. 27
4. प्रजापति सुभाषराम. (वि.सं.2063). संस्कृतिभित्र. नेवाटेक इन्कार्पोरेटेड, सियाटल वाशिङ्टन, सं.रा. अमेरिका. पृ. 63
5. मानन्धर त्रिरत्न.(2015). हांदे दाफाया म्हसिका व म्येया स्वरलिपि. कृष्ण मानन्धर. वंतु, पृ. 3
6. शाक्य यचु. धाः बाजंया म्हसिका. पृ. 23
7. लाछि गणेशमान (वि.सं 2072). अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदामा मद्यपुर. तेजकृष्णा फाउण्डेशन, चपाचो, मद्यपुर थिमी. पृ. 4
8. मानन्धर त्रिरत्न.(2015). हांदे दाफाया म्हसिका व म्येया स्वरलिपि. कृष्ण मानन्धर. वंतु, पृ. 4
9. प्रजापति सुभाषराम. (वि.सं.2063). संस्कृतिभित्रा. नेवाटेक इन्कार्पोरेटेड, सियाटल वाशिङ्टन, सं.रा. अमेरिका. पृ. 75
10. शाक्य यचु. धाः बाजंया म्हसिका. पृ. 24